

## मोहन राकेश के नाटकों में जीवन-सत्य

बिरमती

Department of Hindi, Distance Learning, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India

सारांश

सत्य एक ऐसा शब्द है जिसमें आयाम की विराटता और विस्तार सन्निहित है। व्यक्ति सत्य से लेकर विश्व-सत्य तक इसकी सीमा में आता है। सृष्टी के आरंभ से आज तक मनुष्य सत्य की खोज में लगा हुआ है। कुल मिलाकर सत्य का जीवन और जगत् से अविच्छिन्न सम्बन्ध है। इसलिए किसी न किसी रूप में सत्य का अन्वेषण, सत्य का अवलम्ब मनुष्य के लिए अपरिहार्य हो जाता है; क्योंकि सत्य से व्यक्ति और समाज के नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को बल मिलता है। एक सफल साहित्यकार अपने परिवेश से प्रभावित होता है; किन्तु वह परिवेश को भी प्रभावित करता है। अपने कृत्यों से वह युग पर अपनी छाप छोड़ने में पीछे नहीं रहता। अपने परिवेश से जीवन की विपुल सामग्रियों प्राप्त कर उन्हें युगबोध की जमीन पर अपने सांचे में ढालता है; पुनः वह नवीकृत रूप से इन सामग्रियों को समाज के लिए धरोहर बना देता है।

मूल शब्द: नाटक, जीवन-सत्य, मनुष्य, नैतिक, आध्यात्मिक जीवन।

प्रस्तावना

हिन्दी नाटक के क्षेत्र में मोहन राकेश का योगदान अविस्मरणीय है। राकेश जी ऐतिहासिक, पौराणिक, आधुनिक, सामाजिक नाटक लिखने वाले एक समर्थ कलाकार हैं। उनके प्रत्येक नाटक में दृढ़ व सत्य उद्घटित होता है। राकेश कृत आषाढ़ का एक दिन हिन्दी नाटक यात्रा में नाट्यकृति का एक ऐसा पड़ाव है जहाँ से न केवल राकेश की रचना यात्रा आरंभ होती है बल्कि हिन्दी के मूल नाटक का श्रीगणेश भी होता है। 'हिन्दी नाट्य जगत् और रंग जगत्' की सारी जड़ता और प्रचलित रूढ़ियों को तोड़ने वाला यह नाटक राकेश की भारतीयता और आधुनिकता हमारे अपने परिवेश में से ही समस्याओं से उत्पन्न द्रन्द्र को खोज निकालने की आकुलता को प्रत्यक्ष सामने लाती है।

आषाढ़ का एक दिन के कथानक का सम्बन्ध कवि कालिदास के जीवन से है। उसकी प्रेयसी गाँव की एक सीधी-सादी, भावुक, प्रेममयी और सम्पूर्ण समर्पण की भावना से युक्त एक लड़की मल्लिका है। इसका प्रेम निश्चल और अनश्वर है। यह प्रेम पवित्र भूमि पर अवस्थित है। इसका प्रमाण है कि मल्लिका कालिदास के व्यक्तित्व को अधिक पूर्ण देखने की आकांक्षा

रखती है। अपना सर्वस्व समर्पित करके वह कालिदास को महान् कवि के रूप में देखती है और एक तरह से पूरे नाटक पर उसी का कोमल समर्पणशील व्यक्तित्व छा जाता है।

दूसरी तरफ कालिदास की रचनात्मक प्रतिमा की मूल प्रेरणा में मल्लिका कहीं न कहीं बैठी हुई है। कालिदास के माध्यम से वर्तमान की स्थिति पर ध्यान देते हुए राकेश ने दिखाना चाहा है कि एक सृजनशील कलाकार किस तरह व्यवस्था द्वारा कुचल और तोड़ दिया जाता है। आज के मूल्य बोध से युक्त असाधारण कवि या साहित्यकार न व्यवस्था को एकदम छोड़ पाता है और न उससे समझौता करते हुए चल पाता है। कालिदास का अन्तर्द्वंद्व और टूटन आज के साहित्यकार का दृढ़ और पीड़ा है। कालिदास के टूटे हुए व्यक्तित्व में हम राकेश के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब देख सकते हैं, सत्य यह है कि कालिदास के चरित्र-चित्रण में स्वयं राकेश की उनके अपने व्यक्तित्व की दृढ़ शंकाओं और प्रश्नों की ही अभिव्यक्ति हुई है।

मोहन राकेश की नाट्ययात्रा का दूसरा पड़ाव है ऐतिहासिक आख्यान पर आधारित 'लहरों के राजहंस' अश्वघोष के महाकाव्य 'सौंदरानंद' से कथानकीय उपजीत्य लेकर उसकी

कथावस्तु का नाटकीय पुनराख्यान किया गया है। इसमें आधुनिक जीवन का पर्याप्त भावबोध है। नाटक में पारिवारिक सुख लिप्सा और आरोपित आध्यात्मिकता के आपसी विरोध के बीच खड़े एक व्यक्ति के निर्णय एवं चयन के दृढ़ को जीवन्तता प्रदान करना नाटक में एक प्रयास जान पड़ता है। एक स्त्री और पुरुष के आपसी सम्बंधों के संघर्ष और अन्तर्विरोध में इस दृढ़ को देखा जा सकता है।

“नारी का आकर्षण पुरुष को पुरुष बनाता है और उसका आकर्षण उसे गौतमबुद्ध बना देता है।”

‘लहरों के राजहंस’ की आधुनिकता बौद्धकालीन ऐतिहासिक परिवेश पर आधारित है। नंद और सुंदरी का नाटक में जिस रूप में प्रस्तुतिकरण हुआ है वह सर्वथा आधुनिक है।

“नंद का अन्तर्दद, तनाव, अस्थिरता, घुटन और जीवन-जगत् में उसकी आसक्ति, उसका उतार-चढ़ाव आधुनिक मनुष्य की स्थिति और उसकी नियति का प्रमाणिक दस्तावेज है।”

सिद्धार्थ का सौतेला भाई नंद गौतमबुद्ध के सिन्धातों से अधिक अपने बड़े भाई से प्रभावित है एक तरफ उसे सुंदरी का अनुपम सौंदर्य अतिशय अनुराग में बांधता है; दूसरी ओर अपने बड़े भाई के प्रति आदर और सम्मान उसे खींचता है सुंदरी और सिद्धार्थ के बीच आकर्षणों में खड़ा नंद का अन्तर्दद उसे तोड़ देता है। उसका यही टूटना आज के मनुष्य के टूटने की संवेदना है।

आधुनिक हिंदी नाटक साहित्य की परिसम्पदा की श्रीवृद्धि में मोहन राकेश प्रणीत आधे-अधूरे नाटक उनकी तीसरी एवं एक जबरदस्त कड़ी है। यह नाटक एक मध्यवर्गीय परिवार के विघटन और स्त्री-पुरुष के संघर्ष के बारे में है। इस नाटक में सवित्री नामक स्त्री अपने पति महेंद्र से असंतुष्ट है और अपने लिए एक पूर्ण आदमी की तलाश में है और उसका यह दर्द उसके इस कथन से प्रदर्शित होता है जब वह कहती है कि “सब के सब एक जैसे हैं, अलग-अलग मुखौटे पर चेहरा सब का एक है। आधे-अधूरे का सर्वाधिक महत्व उसके भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति है। नेमिचन्द्र जैन के विचार में ‘आधे-अधूरे’ का महत्व यह है कि वह आज के यथार्थ को सीधे पेश करता है; अतीत की किसी कथा के माध्यम से नहीं। नाटक में व्यक्ति के

अपने भावबोध उसके जीवन और उसके परिवेश को एक सार्थक सत्य से साक्षात्कार प्राप्त हो सका है।

अत्यंत छोटे-छोटे संवादों बल्कि बिन्दुओं के माध्यम से बात की गंभीरता को व्यक्त करने की क्षमता के साथ यह नाटक पूर्ण नहीं बल्कि प्रारंभिक अधूरेपन के साथ उनकी कलम से जन्म लेकर पाठकों के बीच आया अपनी अंतरंगता का पूरा विश्वास रखकर कमलेश्वर जी ने इस अपूर्ण कार्य को पूरा करने का साहस जुटाया। मोहन राकेश की सहधर्मिणी अनीता राकेश ने स्वयं स्वीकार किया है-“अपने भीतर व ‘पैर तले की जमीन’ के रिहर्सल ही नहीं, पूरा नाटक पूरी साज-सज्जा के साथ अंतिम रूप से खेल चुके थे-एक माने में अब केवल टाइपराइटर पर कागज चढ़ाकर उसे उतारना ही बाकी था और विश्वनाथ जी को उसे प्रकाशनार्थ दे देना/अन्य नाटकों की तरह इस मन की उलझनों और बिखराव का प्रतिफल है- “पैर तले की जमीन”, नाटक में भी राकेश की मूलदृष्टि का उद्घाटन हुआ है। इस नाटक में उन्होंने मनोवैज्ञानिक द्रन्द्रों को अपने पात्रों के माध्यम से उजागर किया है – अबदुल्ला अत्यंत द्रन्द्रग्रस्त पात्र है आधे-आधूरे की भाँति पैर तले की जमीन भी अस्व-व्यस्त, हड़बडाहट, बेचैनी, खालीपन, तथा चारों ओर के बिखराव से आरम्भ होता है। नाटककार अयूब के माध्यम से कहता है ‘उधर..... मुझे एक और चाहिए। औरत.....जो मौते के खतरे के बावजूद मेरा.....साथ दे सके । समझे । नहीं समझे.....कोई बात नहीं। इस प्रकार मोहन राकेश का प्रत्येक नाटक जीवन के कटु सत्य को उद्घाटित करता है जो आज के जीवन का यथार्थ है।

### निष्कर्ष

मोहन राकेश अपने नाटकों में जीवन के जिन सत्यों का उद्घाटन करते हैं; उनके वह मात्र द्रष्टा और स्रोत ही नहीं भोक्ता भी हैं। सामाजिक, भौतिक, बौद्धिक, उपयोगितावादी और उपभोक्तावादी उपसांस्कृतिक मूल्यों की स्वीकृति के कारण मानव जीवन बिखराव, टूटन, घुटन, तनाव और संत्रास झेलने को अभिशप्त है, किन्तु इनकी मुक्ति प्राप्त करने में भी मनुष्य असमर्थ है। क्योंकि वह उपभोक्तावाद का शिकार तो है ही, संघर्ष शक्ति से भी रहित है। वह चाहकर भी उक्त मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन नहीं कर पाता है और उन्हें मानवीय अस्मिता की रक्षा करते हुआ मानवीय मूल्यों से सम्पृष्ट नहीं कर पाता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गिरीश रस्तोगी-मोहन राकेश और उनके नाटक, पृ0-63
2. गिरीश रस्तोगी-मोहन राकेश और उनके नाटक, - पृ0 66
3. गिरीश रस्तोगी-मोहन राकेश और उनके नाटक, - पृ0 67
4. जयदेव तनेजा-लहरों के राजहँस-विविध आयाम, पृ0 86
5. डॉ0 सुरेश चन्द शुक्ल: आधुनिक हिन्दी नाटक, पृ0 111
6. साप्ताहिक हिन्दुस्तान : 11 मई 1971, पृ0 32
7. मदनलाल: नाटककार मोहन राकेश (संवाद शिल्प) पृ0 86